भक्ति के सूक्ष्म विचार

श्रीश्रीमद्भक्तिदयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का
शिक्षा-समन्वित जीवन चरित्र

SGD

अपने गुरुभ्राताओं की सेवा करने की उत्कण्ठा

श्रील प्रभुपाद के आश्रित श्रीजगमोहन प्रभु ने गुरु महाराज तथा श्रील भक्तिकुसुम श्रमण गोस्वामी महाराजजी के पास एक ही समय में पत्र भेजा जिसमें उन्होंने उनमें से किसी भी एक के साथ रहने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने गुरु महाराज को लिखा, "मैंने सुना आपने कोलकाता में भी श्रीचैतन्य गौडीय मठ नामक प्रतिष्ठान की

स्थापना की है, मैं आपके निकट आकर रहना चाहता हूँ, यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो मुझे बतलाने से मैं वैसी व्यवस्था कर लूँगा।"

गुरु महाराज ने पत्र मिलने के साथ-ही-साथ बिना विलम्ब किए श्रीजगमोहन प्रभु को उत्तर में लिखा, "आप इस कंगाल पर कृपा करने के लिए आना चाहते हैं यह जानकर मैं अत्यधिक उत्साहित हुआ हूँ। कारण, इसी से प्रतीत होता है कि मेरे प्रति

श्रील प्रभुपाद की कृपा अभी भी है। आप मेरा पत्र प्राप्त करने के साथ-ही-साथ आने की कृपा कीजिए।"

श्रील भक्तिकुसुम श्रमण गोस्वामी महाराज ने पत्र भेजने में कुछ देरी की, इसलिए श्रीजगमोहन प्रभु को पहले गुरु महाराज का पत्र प्राप्त हुआ। कुछ दिनों के पश्चात् श्रीजगमोहन प्रभु ने पुनः पत्र लिखकर बतलाया, "मैंने सुना है आप इस वर्ष श्रीव्रजमण्डल

परिक्रमा का आयोजन कर रहे हैं अतएव मैं आप लोगों के साथ परिक्रमा के बाद एक ही बार कोलकाता जाऊँगा।"

गुरु महाराज ने उन्हें लिखकर भेजा, "यद्यपि श्रीव्रजमण्डल परिक्रमा की बात चल रही है तथापि यदि वैसा होगा तो फिर आप रजिस्टर्ड बोगी में हमारे साथ पुनः जाएँगे। एक बार संग प्रदान करने का लोभ दिखाकर अब उस से वञ्चित मत कीजिए।"

गुरु महाराज के पत्र को प्राप्त करके श्रीजगमोहन प्रभु ने कोलकाता आने की तिथि इत्यादि के विषय में सूचित किया। गुरु महाराज ने एक दिन मुझे अपने निकट बुलाकर कहा, "मेरे एक गुरुभ्राता श्रीजगमोहन प्रभु आज मथुरा से आने वाली रेलगाड़ी के माध्यम से हावड़ा स्टेशन पर आएँगे, तुम उन्हें हावड़ा से अत्यधिक सम्मान पूर्वक माला-चन्दन तथा साष्टांग प्रणाम आदि करके ले आना। यद्यपि वे श्वेत

वस्त्र धारण करते हैं किन्तु तब भी वे अत्यधिक निष्ठावान हैं, नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं। उन्होंने मस्तक पर अवश्य ही उज्ज्वल तिलक धारण किया हुआ होगा। उनका नाम आदि पूछकर तुम उन्हें टैक्सी बुक करके लाना, बस या ट्राम में मत लाना।"

मैं गुरु महाराज के आदेशानुसार श्रीजगमोहन प्रभु को लेने के लिए हावड़ा स्टेशन पर गया। उन दिनों सीट

आरक्षण की सुविधा नहीं होती थी इसलिए मैं एक-एक कोच में उन्हें ढूँढते हुए गया । सफेद वस्त्र, उज्ज्वल तिलक धारण आदि को देखकर मैंने उनसे पूछा, "क्या आप जगमोहन प्रभु हैं?"

उन्होंने हाँ अथवा न कुछ नहीं कह कर पूछा, "क्या माधव महाराज ने तुम्हें भेजा है?"

मैंने कहा, "हाँ।" तब मैंने उन्हें माला-चन्दन आदि

देकर प्रणाम किया तथा उनकी अटैची, बिस्तर बन्द, बाल्टी आदि को उठाकर टैक्सी में लेकर गया एवं उन्हें मठ में ले आया। गुरु महाराज उन्हें प्राप्त करके अत्यधिक आनन्द में विभोर हो गए।

श्रीलगुरुदेव